श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश

सम्पादक : डॉ. अमित जैन
Mob. 9837394448, 9997889995
E-mail : amitraijain78@gmail.com

मई - द्वितीय
अंक - 10

विक्रम संवत् - 2083
वीर संवत् - 2552
ई. सन् - 2026

श्रमण संघीय प्रथम पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्माराम जी म.

श्रमण संघीय द्वितीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म.

श्रमण संघीय तृतीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.

श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ अमृत महोत्सव वर्ष (1952 - 2026)

Address Here

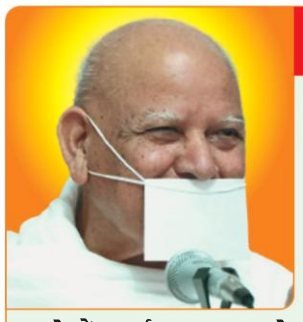

आत्मार्थियों का संघ श्रमण संघ

- युग प्रधान आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.

श्रमण संघ उसे कहते हैं, जिसमें चारों तीर्थ आत्मार्थी हो अर्थात् जो अपने जीवन के प्रत्येक पल का उपयोग आत्मा को केन्द्रीभूत करके आत्म स्वभाव में रमण हेतु करते हैं। कर्म क्षय का उद्देश्य लेकर, मन, बुद्धि व इन्द्रियों पर संयम रखते हुए इनके पार जाकर आत्म रमण करते हैं। आत्मार्थी का प्रत्येक पल आनन्द-शान्ति, सुख-समृद्धि व ज्ञान से युक्त होता है।

तीर्थ - 1. जिसके जीवन का एकमात्र लक्ष्य जीव के कल्याण का हो। 2. जो साधक सत्य का अन्वेषण करता है, 3. सत्य की शोध के लिए सत्य पर श्रद्धा करता है व असत्य का परिहार करता है। 4. सत्य में जीने के लिए पुरुषार्थ करता है, सत्य में ठहरता है उसे ही हम तीर्थ कहते हैं।

तीर्थ में जीने वाला प्रत्येक साधक 24 घण्टे आनन्द, शांति व समभाव में जीने हेतु पुरुषार्थरत रहता है। ऐसे चतुर्विध संघ को तीर्थंकरों ने तीर्थ कहा है। तीर्थ के चार अंग है साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका। चारों तीर्थ सर्वप्रथम अरिहंत परमात्मा से ज्ञान प्राप्त करते हैं। उस ज्ञान को तत्वज्ञान कहते हैं। तत्त्व 9 है - जीव, अजीव, पुण्य-पाप, आस्रव-संवर, निर्जरा, बन्ध व मोक्ष। जिसे तत्व का बोध प्राप्त हो जाए उसे ही आगमकार ने सम्यक् दर्शन कहा है - 'तत्वार्थ श्रद्धानां सम्यक् दर्शनं' जीव अनादि काल से चार गति चौरासी लाख जीव योनि में भव भ्रमण कर रहा है, उसके मूल 5 कारण है - 1. मिथ्यात्व, 2. अव्रत, 3. प्रमाद, 4. कषाय, 5. योग।

मिथ्यात्व : अर्थात् मिथ्या धारणाएं अपने बारें में व जगत के बारें में असत्य धारणाओं के कारण जीव प्रतिपल प्रतिक्षण कर्म बन्धन करता है और अपने कार्मण शरीर पर कर्म बढ़ाता जाता है। सत्य है - मैं जीवात्मा हूँ और शरीर जिसमें यह जीव रहता है वह भिन्न है, परन्तु गलत धारणा एवं अज्ञान के कारण जीव अपने को गौण कर अपने को देह मानकर, जो भी क्रिया करता है उससे, शुभाशुभ कर्म का बन्धन होता है। इस मिथ्यात्व को क्षय कर सम्यक्त्व अर्थात् सत्य पर श्रद्धान् करना ही सम्यक् दर्शन है।

अविरति : अपने को देह मानने के कारण वह देह के भोगों में आसक्त होता है, भोगवाद से विरक्त नहीं होता और भोगों में आसक्त होकर हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील का सेवन आदि पाप कर्म बढ़ाता जाता है और भव भ्रमण करता रहता है, उसके लिए आर्त्त-रौद्र ध्यान करता है।

आर्त्त ध्यान : अर्थात् पुद्गल का चिंतन, चिंता में आसक्त होकर रौद्र ध्यान हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील व परिग्रह आदि पाप वह देह के लिए करता है, आनन्द मनाता है उसे रौद्र ध्यान कहते हैं। हिंसानंदी, मृषानंदी, चोर्यानंदी, संरक्षणनंदी आदि से चिकने कर्म बांध लेता है व अपना संसार बढ़ाता है।

प्रमाद : बेहोशी, कर्त्ता भाव, भोक्ता भाव आदि कर्म बन्ध के कारण हैं, जितनी देर साधक को अपने स्वरूप का होश नहीं रहता और बेहोशी में अपने को कर्त्ता भोक्ता मानकर जो भी क्रिया करता है उससे कर्म बन्धन होते हैं। स्वरूप बोध के आधार पर जब उसे होश रहता है, स्मरण रहता है, मैं आत्मा हूँ और आत्मा के स्वभाव ज्ञाता-दृष्टा भाव में रमण करता है तो उसे अप्रमत्त कहते हैं। अप्रमत्त साधक कर्म बन्धन नहीं करता अपितु कर्म क्षय करते हुए अनंत सुख का अनुभव करता है। (क्रमशः)

अध्यक्षीय

संस्कारित पीढ़ी समर्थ समाज का आधार

- अतुल जैन - राष्ट्रीय अध्यक्ष
E-mail : ajvk1973@gmail.com

प्रिय समाजबंधुओं,

किसी भी समाज का भविष्य उसके वर्तमान में हो रहे संस्कार निर्माण पर निर्भर करता है। यदि बाल्यावस्था में ही श्रेष्ठ विचार, नैतिक मूल्य और सांस्कृतिक चेतना का समावेश हो जाए, तो वही पीढ़ी आगे चलकर समाज को नई दिशा और ऊँचाई प्रदान करती है। आज आवश्यकता केवल शिक्षित युवाओं की नहीं, बल्कि संस्कारित, संवेदनशील और उत्तरदायी नागरिकों की है, और यही कार्य संस्कार निर्माण शिविरों के माध्यम से प्रभावी रूप से किया जा सकता है।

संस्कार निर्माण शिविर केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि भावी समाज की आधारशिला हैं। इन शिविरों में बच्चों को धर्म, अनुशासन, संयम, सेवा, सहअस्तित्व और नैतिक जीवन के मूल्यों से परिचित कराया जाता है। आधुनिक जीवनशैली और तकनीकी व्यस्तताओं के बीच जब परिवारों में समय और संवाद सीमित हो रहे हैं, ऐसे में ये शिविर बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए एक सशक्त माध्यम बनकर उभरते हैं।

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि वर्तमान में श्रमण संघ स्थापना का अमृत महोत्सव वर्ष चल रहा है। इस पावन अवसर को केवल उत्सव तक सीमित न रखते हुए इसे संस्कार-निर्माण के व्यापक अभियान में परिवर्तित करना समय की मांग है। जैन कॉन्फ्रेंस की सभी प्रांतीय महिला एवं युवा शाखाओं से विशेष अपेक्षा है कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में संस्कार निर्माण शिविरों का आयोजन करें। यह न केवल समाज की नई पीढ़ी को सशक्त बनाएगा, बल्कि संगठन की जड़ों को भी और अधिक दृढ़ करेगा।

युवा शक्ति किसी भी परिवर्तन की धुरी होती है। यदि युवा स्वयं आगे बढ़कर इन शिविरों के आयोजन, संचालन और मार्गदर्शन में भूमिका निभाएँ, तो इसका प्रभाव कई गुना बढ़ सकता है। मातृशक्ति का स्नेह, युवाशक्ति का उत्साह और वरिष्ठों का मार्गदर्शन, इन तीनों का समन्वय ही एक आदर्श समाज का निर्माण करता है।

आज आवश्यकता है कि हम केवल विचारों तक सीमित न रहें, बल्कि उन्हें क्रियान्वित भी करें। प्रत्येक शहर, प्रत्येक क्षेत्र में यदि ऐसे शिविर नियमित रूप से आयोजित हों, तो निश्चित ही आने वाले वर्षों में एक ऐसी पीढ़ी तैयार होगी, जो न केवल अपने धर्म और संस्कृति से जुड़ी होगी, (शेष पृष्ठ 4 में)

सम्पादकीय

अहिंसा की राजनीति बनाम मांसाहार का हास्यास्पद प्रदर्शन ?

- डॉ. अमितराय जैन - राष्ट्रीय महामंत्री

भारत एक लोकतांत्रिक देश है, जहाँ चुनाव केवल सत्ता परिवर्तन का माध्यम नहीं, बल्कि विचारों, मूल्यों और नैतिकता की भी परीक्षा होते हैं। समय-समय पर विभिन्न राज्यों में होने वाले चुनाव इस बात को परखते हैं कि राजनीतिक दल अपने सिद्धांतों पर कितने अडिग हैं और जनता के सामने किस प्रकार की छवि प्रस्तुत करते हैं। हाल ही में पश्चिम बंगाल में सम्पन्न हुए विधानसभा चुनावों के दौरान एक विचित्र और चिंताजनक प्रवृत्ति देखने को मिली। कुछ तथाकथित राष्ट्रीय स्तर के नेताओं ने स्थानीय जनता को आकर्षित करने के उद्देश्य से सार्वजनिक रूप से मांस और मछली का सेवन करते हुए अपने "लोकप्रिय" होने का प्रदर्शन किया। इसे इस रूप में प्रस्तुत किया गया मानो यह क्षेत्रीय संस्कृति के प्रति सम्मान हो, लेकिन वस्तुतः यह वोट बैंक की राजनीति का एक नया और सतही रूप प्रतीत होता है।

हमें यह स्वीकार करना होगा कि मांसाहार केवल आज की प्रवृत्ति नहीं है, बल्कि विश्व में प्राचीन समय से एक खानपान परंपरा के रूप में विद्यमान रहा है। विभिन्न भौगोलिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के कारण अनेक समाजों में यह सामान्य जीवनशैली का हिस्सा रहा है, किन्तु इसके साथ ही यह भी उतना ही सत्य है कि भारत की आध्यात्मिक परंपराओं में अहिंसा और करुणा को सर्वोच्च स्थान दिया गया है।

विशेष रूप से जैन धर्म, उसकी समृद्ध संस्कृति और जैन परंपरा में अहिंसा केवल एक सिद्धांत नहीं, बल्कि जीवन का मूल आधार है। यहाँ शाकाहार के अतिरिक्त किसी भी प्रकार के हिंसात्मक आहार का न तो समर्थन है और न ही उसे किसी रूप में स्वीकार्यता प्राप्त है। जीव मात्र के प्रति करुणा, संवेदना और अहिंसा का पालन जैन आचार-विचार की आत्मा है।

इसी संदर्भ में यह प्रश्न और भी गंभीर हो जाता है कि जब कुछ राजनीतिक दल स्वयं को नैतिक मूल्यों, अहिंसा और संवेदनशीलता का प्रतीक बताकर जनता के बीच जाते हैं, और एक समय में अहिंसक समाज भी उन्हें सिरमौर श्रेणी में रखकर चुनावी लाभ प्रदान करता है तो फिर चुनावी लाभ के लिए मांसाहार का खुलेआम प्रदर्शन किस प्रकार उचित ठहराया जा सकता है? यह न केवल वैचारिक विरोधाभास है, बल्कि समाज में गलत संदेश भी प्रसारित करता है।

हम स्पष्ट रूप से मानते हैं कि मांसाहार की प्रवृत्ति का इस प्रकार सार्वजनिक और प्रदर्शनात्मक रूप में प्रचार-प्रसार स्वीकार्य नहीं है। यह केवल व्यक्तिगत आहार की बात नहीं रह जाती, बल्कि एक सांस्कृतिक और नैतिक विमर्श का विषय बन जाती है। राजनीति को इस प्रकार के प्रतीकात्मक और विवादास्पद प्रदर्शनों से दूर रहना चाहिए। (शेष पृष्ठ 4 में)

प्रेस्टीज

प्रतिबद्ध है भारत को समृद्ध एवं प्रबुद्ध बनाने के लिये अपने
सर्वश्रेष्ठ सोया प्रोटीन सोया तेल, वनस्पति, सोया बड़ी गेहूँ का आटा
मैदा, रवा, सूजी और उत्कृष्ट शिक्षा K.G. से Ph.D. के द्वारा
भारत को जरूरत है स्वर्ण पदकों की ओलम्पिक
और नोबल पुरस्कार विजेताओं की
स्वस्थ व प्रबुद्ध भारत के लिये
प्रेस्टीज सोया खाद्य और समग्र शिक्षा
बेहतर भोजन - बेहतर शिक्षा - बेहतर राष्ट्र

प्रेस्टीज फूड्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (अंडर ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज फीड मिल्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (पोस्ट ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज सोया इंडस्ट्रीज	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, ग्वालियर
प्रेस्टीज फ्रोटेक लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, देवास
प्रेस्टीज फीड मिल्स	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड साइंस, इंदौर
प्रेस्टीज फैब्रिकेटर्स प्रा. लिमिटेड	प्रेस्टीज पब्लिक स्कूल, इंदौर

प्रेस्टीज ग्रुप ऑफ इन्डस्ट्रीज एंड इंस्टीट्यूट्स
स्टार एक्सपोर्ट हाउस (भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त) आई.एस.ओ. : 9000 2001 प्रमाणिक ग्रुप
30, Jaora Compound, M.Y.H. Road, Indore - 452001, M.P.
Phone.: 0731-4011111, 4041111 Fax: 4011107, 2704455 E-mail: info@prestigeindia.com Website: prestigeindia.com

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के पदाधिकारी साधु-साध्वीवृंद

युगप्रधान, ध्यानयोगी, आचार्य सम्राट् परम पूज्य श्री शिवमुनिजी म.सा.

आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.

उपाध्याय मण्डल

परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म.सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म.सा. 'प्रथम'

प्रवर्तक मण्डल

परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा.

मंत्री मण्डल

परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म.सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म.सा. 'कमलेश' (संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

सलाहकार मण्डल

परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म.सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म.सा. 'निर्भय'

प्रवर्तिनी मण्डल

परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म.सा.

संघ सम्मान ही आत्म सम्मान

- युवाचार्य प्रवर श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा.

संघ शक्ति है, ऊर्जा है। अलग-अलग रहे तिनकों से कचरा बनाता है और एकत्रित तिनको से कचरा साफ होता है। सूरज की बिखरी किरणें मात्र उष्मा देती है और वे ही परावर्तन से केन्द्रित होने पर ऊर्जा बनती है। प्रत्येक इकाई में रहने वाली योग्यता एकत्रित होने पर पूर्णता से प्रकट होती है। पदार्थ की यही व्यवस्था साधक जगत में भी लागू होती है। संघ यह साधक वर्ग की क्षमताओं के प्रकटीकरण का पारंपरिक अधिष्ठान है।

संघ की महिमा : संघ की विशेषताओं को नंदीसूत्र में भिन्न-भिन्न उपमाओं के माध्यम से उल्लेखित किया गया है। युगो के भवन, आगमों के रत्न, श्रद्धा का राजमार्ग, चारित्र के प्राचीर से सुशोभित, संघरूपी नगर है। संयम की धुनी, तप के आरे, सम्यक्त्व की परिधि युक्त अन्य चक्र से अपराजित संघ रूपी चक्र है। शील (सदाचार-ब्रह्मचर्य) रूपी पताका, तप व्रत-नियम रूपी अश्व से युक्त स्वाध्याय की सुमधुर ध्वनि से गुंजित, संघ रूपी रथ है। कर्म रूपी रज से उत्पन्न, भव जल प्रवाह से ऊपर उठे हुए, पाँच महाव्रत रूपी पराग, सत्ताईस गुण रूपी केसर युक्त श्रावक-श्राविका रूप मधुकरों से घिरा, जिनेश्वर देव रूपी सूर्य से खिलने वाले श्रमण-श्रमणी रूप पत्रों से सुशोभित, पद्मकमल के समान संघ है।

संघ का सम्मान : संघ के महिमा वर्णन, गुण दर्शन का उद्देश्य है संघ की गरिमा का बोध होना। संघ का सम्मान जिनेश्वर देव का सम्मान है। तीर्थंकर परमात्मा का, अनंत सिद्धों का सम्मान है। जिन शासन प्रभावक महान आचार्य परम्परा का, श्रुतधर, बहुश्रुत, वाचना प्रमुख महापुरुषों का सम्मान है। संघ का सम्मान तीर्थंकर गणधरों द्वारा प्ररूपित आगम का, आज्ञा का सम्मान है। संघ के सम्मान से साधना में शुद्धता, दृढ़ता, पवित्रता, तेजस्विता वृद्धिंगत होती है।

संगठन : इसी मंगलमय भावना से हमारे पूर्वाचार्यों ने अगल-अलग सम्प्रदाय के रूप में विकीर्ण (बिखरी हुई) स्थानकवासी परम्परा के समान आचार विचारधारा के परम्पराओं को श्रमण संघ के रूप में एकत्रित किया। एक समाचारी एक आचार्य की व्यवस्था को स्वीकारने हेतु उदार-उदात्त भावना से अपने पद, वर्चस्व, अधिकार का विसर्जन किया। संगठन, सहयोग, सहभाग तथा सम्मान को सर्वोपरी मानकर नई व्यवस्था को स्वीकृति प्रदान की।

श्रमण संघ और हमारा दायित्व : आज इसी दूर दृष्टिपूर्ण तथा त्यागपूर्ण बलिदान का यह फल हमारी पीढ़ी को प्राप्त हो रहा है। उत्तर से दक्षिण तक हजारों क्षेत्रों में रहने वाले परिवार श्रमण संघ के उस गरिमामय परंपरा से जुड़े है। हमारे संघ के प्रत्येक सदस्य का दायित्व अपने उन गुरुदेवों के बलिदान का महत्व जानकर संघ की गरिमा, संघ के सम्मान को अक्षुण्ण रखने हेतु कटिबद्ध रहने का है। श्रमणसंघ से अलग रही तथा अलग हुयी दोनों की परम्पराए श्रमण संघ के उन महापुरुषों की दुहाई देकर आज श्रमण संघ के परम्परागत परिवारों को साम्प्रदायिक घेरे में जकड़ने के लिए प्रयासरत है। गुरुधारणा, धार्मिक, सैद्धांतिक, तात्विक अध्ययन, ज्ञान ध्यान आदि के माध्यम से वे गांवों-शहरों में अपनी परम्परा के स्थापना-विस्तार हेतु पूर्ण सामर्थ्य लगाए हुए हैं। छोटे-छोटे गांवों में जाना, वहीं कुछ दिनों के लिए रूकना आदि ऐसे उपक्रम है जिनसे लोगों में उन सम्प्रदायों के प्रति विशेष अनुराग हो जाता है। परिणाम यह होता है कि उस क्षेत्र में अन्य सम्प्रदाय के साधु साध्वी जी के लिए भी पहुँचना, रहना मुश्किल हो जाता है।

संघ के प्रति कर्त्तव्य व सजगता : श्रमण संघ में सरलता का विशेष संस्कार है। इस कारण अनेकों बार सामान्य बातें भी दूसरे लोगों के लिए जनता में भ्रम फैलाने हेतु अधिक काम आती है। आज के अनेकों नये साधक वर्ग द्वारा श्रमण संघ में प्राप्त स्वतंत्रता, स्वायत्त का दुरूपयोग होता दिखाई दे रहा है। हम अपनी मर्यादाओं का ध्यान स्वयं नही रखेंगे तो वे हमारे विषय में दुष्प्रचार, विषैले प्रचार में सहायक बनती है। हम कई बार अनजाने में अपनी आधुनिकता अथवा साहसिकता के आवेश में अकरणीय, अशोभनीय कार्य करते है। टेक्नालॉजी के इस युग में "हम किसी से कम नहीं" यह मानसिकता साधक वर्ग में बढ़ती जा रही है, यह हमारे लिए धर्म प्रचार का कम अपप्रचार का अधिक कारण बन रही है। श्रद्धा की अभिवृद्धि की बजाय अश्रद्धा को पनपा रही है। किसी विशिष्ट व्यक्ति की भूलें पूरे संघ को प्रश्नचिन्ह के कटघरे में खड़ा कर रही है।

संघ की क्षमता का मूल्यांकन : आज पूरे भारतवर्ष में जितनी जैन परंपरा है उन सभी में श्रमण संघ एक ऐसा संघ है जिसमें सर्वाधिक पी. एच.डी. के स्नातक हैं ऐसा कहा जाता है। आज हमारी इन प्रतिभाओं का सम्मान, उपयोग श्रमण संघ की गरिमा, अभिवृद्धि में होना चाहिए। ज्ञानी-त्यागी-तपस्वी प्रतिभाशाली अनेक विविध शक्तियाँ श्रमण संघ में हैं। उनके क्षमता की प्रस्तुति सही तरीके से हो। संघ का गौरवशाली इतिहास लक्ष्य में लेकर वर्तमान में क्षुद्र बातों को छोड़ हम अपनी क्षमताओं का उपयोग संघ विकास, संघ के उज्जवल भविष्य के लिए करें यह हमारा लक्ष्य बने। हमारे संघ की समस्त प्रतिभाओं से, नई ऊर्जाओं से हार्दिक विनम्र आग्रह है सोशल मीडिया के मोह को छोड़ प्रत्यक्ष में उपलब्ध अवसरों को अधिक महत्व दें। संघ का सम्मान हम सभी का सम्मान है। संघ के सम्मान को आघात न पहुँचे इसका हम ध्यान रखें तथा संघ के किसी भी सदस्य को कोई आँच न आए इस हेतु जागृत रहे।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-विश्वस्त मण्डल

श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर - चेयरमैन	93021 03817
श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर	93434 83838
श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पूना	98505 00015
श्री सुभाष ओसवाल जैन, नई दिल्ली	98110 45440
श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336
श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035
डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
श्री प्रकाश धारीवाल जैन, पुणे	98222 42795
श्री अशोक मेहता जैन, सूरत	98251 19082
श्री उगमचंद गांधी जैन, इचलकरंजी	93260 22525
श्री विनय कुमार जैन, पानीपत	83968 00000
श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
श्री राजीव जैन 'सी.ए.', दिल्ली	98110 42280
श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, छत्रपति संभाजीनगर	82862 00000
श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
श्री सुनील बाफना जैन, घोड़नदी	98505 67010

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की मातृसंस्था
श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण-कार्यकाल वर्ष : 2025-27

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अतुल जैन, दिल्ली	98110 75336
राष्ट्रीय महामंत्री : प्रो. डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष : श्री विनयकुमार जैन, पानीपत	83968 00000
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री विजय जैन, पानीपत	98966 00022
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : श्री नरेश बोहरा जैन, मुंबई	76665 40600
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष : श्री जसवंत जैन, दिल्ली	98104 35108
राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष : श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567

जैन कॉन्फ्रेंस की सभाओं में दानदाताओं का हुआ सम्मान

नई दिल्ली : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली की राष्ट्रीय प्रबंध समिति सभा, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा एवं साधारण सभा में राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन श्री नरेश बोहरा जैन-मुंबई द्वारा एक करोड़ रुपये दिए जाने की घोषणा के उपरांत शॉल, माला एवं साफा द्वारा मंच पर सम्मानित किया गया। वहीं श्री बाबूलाल रांका जैन-बैंगलोर को उनके द्वारा धार्मिक, सामाजिक गतिविधियों में दिए गए दान हेतु शील्ड, शॉल, माला एवं साफे द्वारा सभा के मंच पर सम्मानित किया गया।

कुदरत के जख्म : करने होंगे खत्म - दिलीप गाँधी

सड़कें आग उगलती अब, और झुलस रहा हर तन है,
प्रदूषण के विषैले धुएँ में, घुट रहा सबका मन है।
पशु-पक्षी सब व्याकुल फिरते, ढूँढ़ रहे वो नीर कहीं,
हमने तो बस राख चुनी है, बची अब वो जागीर नहीं।
किन्तु अभी भी समय शेष है, कर लें हम उपचार यहाँ,
प्रकृति माँ के जख्मों पर, कर दें हम उपकार यहाँ।
छोड़ें गलती, माँगें माफी, फिर से सजायें धरती को,
एक वृक्ष लगा कर 'श्रृंगार' करें, बचा लें अपनी हस्ती को।
"विकास की इस दौड़ में, हमने संतुलन को खोया है,
प्रकृति की कराह अनसुनी कर, खुद का भविष्य डुबोया है।
मनुज हुआ विकराल स्वार्थ में, भूल गया अपनी ही जड़ें,
अब समय है कि हम चेतें, और फिर से कुदरत की ओर मुड़ें।"

With Best Wishes :
R.Mahaveer Chand Ranka
Rajesh kumar-Aarti Jain Vinod kumar-Seema Jain
Dr Rohit, Mohit, Shruthi, Shubh kumar, Aditi Jain

JAIN JEWELLERY 916 HALL MARK SHOWROOM POLUR
JAIN SILKS & READYMADES Fashion for Family POLUR
varnalaya EXCLUSIVE DESIGNER WEDDING COLLECTION POLUR TIRUVANAMALAI VILLUPURAM
JAIN PETRO Reliance Petroleum Retail Outlet, Diversion Road, Polur 606-803
OXFORD MATRIC HR. SEC SCHOOL
OXFORD COLLEGE OF ENGINEERING POLUR

R.Mahaveer Chand Ranka
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक - जैन कॉन्फ्रेंस
9444204046
E mail : rmrjainplr@gmail.com

M. Rajeshkumar Ranka
प्रान्तीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस, तमिलनाडु
9994916455
E mail : rajplr246jj@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

कथा-कहानी

योगिराज की कहानियाँ -प्रवर्तक श्री सुभद्र मुनि

शब्द की नाव

एक भक्त महिला थी। वह अपने गाँव के मंदिर में जाती रहती थी। वहाँ कभी-कभी संत महात्मा आते रहते थे। संतों का काम ही है सत्संग करना। आम आदमी को सेवा, भक्ति, निस्वार्थ भावना की प्रेरणा एवं मोह-ममता के परिणाम का उपदेश देना। महिला भी उपदेश सुना करती थी।

एक बार एक महात्मा आए। गाँव में लम्बे समय तक ठहरे। महिला की उनमें बहुत आस्था हो गई। महात्मा काफी बूढ़े थे। पर एक दिन वे उस गाँव से जाने की तैयारी करने लगे। महिला को पता चला तो उसे दुःख हुआ। बोली - महात्मा जी! आपको गाँव में तकलीफ है? दूसरी जगह क्यों जाना चाहते हैं? क्या हम लोगों की भक्ति में कोई कमी है? भक्ति में कमी है या नहीं? यही तो देखना है। मैं गाँव से बहुत दूर नहीं केवल नदी पार की पहाड़ी पर रहूँगा। आने वाले वहाँ भी तो आ सकते हैं। ज्यादा दूर भी नहीं है पहाड़ी।

महात्मा चले गए। भक्त महिला प्रतिदिन उनके पास नदी पर बने पुल को पार कर पहाड़ी पर पहुँचती, उन बूढ़े महात्मा को खाना देती और फिर अपने गाँव लौट आती। ऐसा करते काफी दिन बीत गए।

बरसात का मौसम शुरू होने वाला था। गाँव वाले बरसात आने को होती तब हर साल ही पुल तोड़ दिया करते थे। बरसात बीत जाती तब फिर लकड़ी, घास, बाँस और मिट्टी-पत्थर के द्वारा आठ महीने के लिए पुल बना दिया करते थे। पुल टूटने को था, महिला महात्मा से बोली - महात्मा जी! कल से मैं न दूध ला पाऊँगी न भोजन, क्योंकि पुल टूट जाएगा।

महात्मा जी उसकी सच्चे मन से की जाने वाली भक्ति से प्रसन्न थे। बोले, मैं तुम्हें मंत्र देता हूँ। इसे बोलते हुए आया-जाया करना। तुम्हारे लिए पुल रहे तो और टूट जाए तो भी कोई फर्क नहीं पड़ेगा। जैसे अब आराम से नदी पार करके आती हो, वैसे ही तब भी आती रहोगी।

अगले दिन पुल टूट गया। पर महिला ने हर रोज की तरह दूध और भोजन लेकर आने-जाने का काम जारी रखा। नदी के किनारे ही मंदिर था। मंदिर में सत्संग/भजन/ उपदेश होते रहते थे। उपदेशक ने देखा यह कैसी महिला है। नदी पर पुल नहीं है तब भी पहले जैसे आती-जाती थी, अब भी बराबर आती-जाती है रोज ही।

एक दिन उपदेशक ने पूछ ही लिया बहन! तुम किस मंत्र के आधार पर रोज नदी पार कर महात्मा जी की सेवा करने जाती हो? वह बोली - शब्द/मन्त्र गुरु-सेवा करके पाई हुई सच्ची कमाई है। उसी से मैं बिना रोक-टोक के गुरु-सेवा में पहुँच जाती हूँ। न गुरु को कोई स्वार्थ है, न मुझे। वे मेरी भक्ति देख रहे हैं। मैं भक्ति कर रही हूँ। उन्होंने कृपा कर मंत्र बता दिया। उसी को बोलती जाती हूँ। मुझे नदी में पानी है या नहीं, पता नहीं चलता।

उपदेशक उसकी बात सुन प्रभावित हुआ। अत्यधिक आग्रह से महिला ने उपदेशक को मंत्र बता दिया। एक दिन उपदेशक ने अपने चेलों को साथ लिया और नदी पार करने चल पड़े। किनारे पर पहुँचे तो विश्वास टूट गया। शिष्यों से कहा - ऐसा करो, मेरी कमर में रस्सी बाँध दो। मैं मंत्र बोलता हुआ नदी में उतरूँगा। पार होता चला गया तो रस्सी ढीली छोड़ते जाना। खुद इस पार ही खड़े रहना। अगर मैं डूबने लगूँ तो रस्सी को जल्दी-जल्दी खींच कर मुझे निकाल लेना। उपदेशक ने ऐसा ही किया। नदी में पैर रखा। आगे बढ़े तो पानी कमर से बढ़ते-बढ़ते गले तक पहुँचा। और आगे बढ़े तो डूबने लगे। चेलों ने देखा, गुरु जी तो मर रहे हैं। तभी रस्सी खींचकर उन्हें बाहर निकाला।

नदी से बाहर निकल कर उपदेशक ने कहा - इस मंत्र शब्द में कोई चमत्कार नहीं है। भक्त महिला ने सुना तो बोली - चमत्कार आस्था में होता है। मैं आस्था रूपी शक्ति के जरिए ही हर दिन भरी नदी को पार करती और वापस लौट आती हूँ। महिमा शब्द में नहीं है। महिमा आस्था में है। निस्वार्थ सेवा, निस्वार्थ भक्ति यही मंत्र है। इसी की महिमा है। पार उतर कर जाने और आने के लिए शब्द-मंत्र का तो सहारा होता है।

हम लोग कितने मंत्र बोलते हैं मगर मन उसे पकड़े तभी तो पार उतर जाने का आधार बने? आस्था हो तो शब्द भी नाव बन जाता है।

पंचम आरे में आत्मोत्थान की साधना के अन्वेषक शिवाचार्यश्री जी

- प्रमुख मंत्री श्री शिरीषमुनि जी म.सा.

आत्मज्ञानी सद्गुरुदेव पूज्य श्री शिवाचार्य भगवन् का संयम के 54 बसंत पूर्ण होकर 55वें वर्ष में प्रवेश होने जा रहा है। उनके संयम दिवस को हम साधना दिवस के रूप में मनाएं और जीवन में ग्यारहवें तप शुक्ल ध्यान की साधना को जीवन में आत्मसात करने का संकल्प लेंगे तो सद्गुरु के चरणों में हमारी सच्ची श्रद्धा होगी व गुरु दक्षिणा होगी।

दशवैकालिक सूत्र में संयमी की परिभाषा देते हुए फरमाया है।

"पंचासव-परिण्णाया, तिगुत्ता, छसु संजया।
पंच-निग्गहणा, धीरा, निग्गंथा उज्जु-दंसिणो।"

पाँच आश्रवों का परिज्ञाता, तीन गुप्ति से गुप्त, छःकाय के जीवों पर संयम कर पाँच इन्द्रियों पर निग्रह करने वाले धीर पुरुष निर्ग्रन्थ ऋजुदर्शी होते हैं।

इस गाथा में साधक की साधना का वर्णन किया गया है। जिस साधक को तत्व का बोध हो गया, वह साधक क्या साधना करे? जिससे वह मुक्त हो जाए, तो प्रभु फरमाते हैं -

पंचासव-परिण्णाया - परिज्ञातकर्मा मुनि कर्म आस्रव के स्थान का ज्ञान प्राप्त करें, हेय का त्याग करें।

तीन गुप्ति - आस्रव को रोकने की साधना क्या है? मन वचन काया का गोपन।

मन गुप्ति - मन में होकर विचार नहीं करना व पुराने विचार जो भी निकलकर आए उन्हें गौण करें महत्त्व न दें तो धीरे-धीरे मन खाली होता जाएगा। धर्म व शुक्ल ध्यान से साधक मन के पार जाकर आत्मा में स्थित रहने का पुरुषार्थ करता है।

वचन गुप्ति - वाणी से मुनि मौन रहे और धीरे-धीरे मन को भी मौन कर लें।

काय गुप्ति - काया को स्थिर करना जिसे सामायिक सूत्र में फरमाया, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं अर्थात् काया को स्थिर करें, मौणेणं - मन व वचन का मौन करें। झाणेणं - जीव को जीव में स्थित करने के लिए धर्म व शुक्ल ध्यान का प्रयोग करें व आत्मा को आत्मा में स्थित करें।

त्रिगुप्ति की साधना निवृत्ति की साधना है, जिसमें साधक आत्म रमण करता है। होशपूर्वक प्रवृत्ति के लिए भेद ज्ञान के द्वारा समिति युक्त क्रियाएं करता है।

छःकाया का संयम - पूरे लोक में ठसा-ठस जीव भरे हुए हैं। इन सभी जीवों के परिचय के लिए भगवान ने उन्हें छः भागों में विभाजित किया है। पृथ्वीकाय, अपकाय, तेऊकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय। आत्मदृष्टि से, अभेद दृष्टि से सबमें अपने समान जीव के दर्शन करता है। 'आय तुले पयासु' से सभी जीव मेरे समान है। 'सोऽहं' सभी जीव मेरे समान है। ये अनुभव करना व अपने स्वभाव में रमण करना ही छःकाय का संयम है।

पंच निग्गहणा धीरा - पाँच इन्द्रियों का जो जीव निग्रह करता है अर्थात् वश में रखता है। शब्द, वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श पर संयम रखते हुए धैर्यपूर्वक आत्म रमण करता है, वह निर्ग्रन्थ मुनि ऋजुदर्शी होते हैं अर्थात् सरल होते हैं। दृष्टा होते हैं - दृष्टा वो होते हैं जो प्रतिसमय अपनी आत्मा को केन्द्रीभूत करके सहज सरलता से पहले अपने देह के दृष्टा बनते हैं और धीरे-धीरे इसमें परिपक्वता लाकर मोह के प्रथम स्थान देह का मोह क्षय करते हैं और एक समय आने पर वह मुनि तीन लोक का दृष्टा होता है। तीनों काल व तीनों लोक का दृष्टा हो जाता है। ऐसा मुनि 24 घण्टे आनन्दपूर्वक आत्म साधनारत रहता है।

सद्गुरुदेव की प्यास ने इस धरा पर महावीर की मूल साधना को अरिहंत परमात्मा सीमंधर स्वामी की कृपा पंचम आरे में चतुर्थकाल की साधना को धरा पर लाने के निमित्त बने। वे सतत् धर्म से शुक्ल-ध्यान की साधना में रत रहते हैं। आपने कर्म आस्रव के प्रथम स्थान अनादिकाल के मिथ्यात्व को क्षय किया है, इन्द्रिय भोगों से निवृत होकर त्रिगुप्ति की साधना करते हुए प्रत्येक जीव में आत्मा के दर्शन करते सभी जीवों के कल्याण के लिए मोक्ष मार्ग में आगे बढ़ रहे हैं।

आप सदैव अप्रमत्तता की साधना कर रहे हैं एवं अपनी आत्मा के लिए सतत् जागरूक हैं। अकषाय स्वभाव की साधना से आपका विभाव छूटता जा रहा है। कषाय को मूल से क्षय करने हेतु सतत् पुरुषार्थरत है। त्रियोग से पार आत्मा को आत्मा में स्थित करने हेतु पुरुषार्थरत है। ऐसे शिवाचार्य भगवन स्वयं की साधना के साथ-साथ चतुर्विध संघ को भी आत्म साधना में प्रवेश करवा रहे हैं। ऐसे आत्मज्ञानी सद्गुरुदेव के 55वें दीक्षा दिवस पर अनंत-अनंत शुभकामनाएं।

प्रचंड गर्मी में जैन साधु-साध्वियों का विहार तप, त्याग और सहनशीलता की अदभुत साधना

- जिनेन्द्र कुमार बाफना जैन

जैन धर्म में साधु-साध्वियों का जीवन त्याग, संयम और तपस्या का सर्वोच्च उदाहरण माना जाता है। विशेष रूप से तीव्र गर्मी में उनके विहार को असाधारण साधना के रूप में देखा जाता है। जब सामान्य जन प्रचंड गर्मी से बचने के उपाय खोजते हैं, तब जैन साधु-साध्वी नंगे पैर और बिना किसी सुविधा के केवल आत्मशुद्धि और लोककल्याण की भावना से एक स्थान से दूसरे स्थान तक विहार करते हैं।

जैन आचार संहिता के अनुसार साधु-साध्वियाँ किसी भी प्रकार के वाहन का उपयोग नहीं करते हैं। वे प्रतिदिन कई मिलोमीटर पैदल चलते हैं, चाहे मार्ग कितना ही कठिन क्यों न हो। गर्मी के दिनों तपी धरती, तेज धूप और ऊष्ण हवाएँ उनके विहार को और अधिक कठिन बना देती है, फिर भी वे अदम्य धैर्य और आत्मबल के साथ अपने नियमों का पालन करते हैं। यह त्याग और तपस्या आम जनमानस के लिए प्रेरणा स्त्रोत है।

विहार केवल एक यात्रा नहीं, बल्कि आत्मानुशासन औश्र साधना का माध्यम है। इसके दौरान साधु-साध्वियाँ जीवों की अहिंसा का विशेष ध्यान रखते हुए अत्यंत सावधानी से चलते हैं। वे जल, छाया या आराम की अपेक्षा किए बिना अपनी साधना में निरंतर अग्रसर रहते हैं। उनका यह जीवन हमें सिखाता है कि आत्मिक शांति और सच्चा सुख भौतिक साधनों में नहीं, बल्कि संयम और संतोष में निहित है।

गर्मी के इस कठिन समय में जब साधु-साध्वियाँ विहार करते हैं, तब श्रावक-श्राविकाएँ उनके प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए सेवा और साहयोग का अवसर प्राप्त करते हैं। वे मार्ग में जल, छाया और आवश्यक व्यवस्थाओं का ध्यान रखते हैं, जिससे साधु-साध्वियों की साधनों में किसी प्रकार की बाधा न आए। यह परस्पर सहयोग जैन समाज की एकता और भक्ति का प्रतीक है।

अंततः, जैन साधु-साध्वियों का ग्रीष्मकालीन विहार केवल धार्मिक परंपरा नहीं, बल्कि मानव जीवन के लिए एक गहन संदेश है। संयम, सहनशीलता और आत्मबल के माध्यम से ही जीवन का वास्तविक उत्थान संभव है। उनका तपमय जीवन हमें प्रेरित करता है कि हम भी अपने जीवन में सादगी, अनुशासन और करूणा को अपनाएँ।

प्रमाद से प्रमोद

सजग जीवन की साधना

पुस्तक से साभार

लेखक-गुरुभक्त अतुल जैन

(गतांक से आगे) **अध्याय 17**

ज्ञाता भाव - आध्यात्मिक अहंकार (गहन विस्तार)

कर्ताभाव स्पष्ट है। नियंता भाव पहचाना जा सकता है। रक्षक भाव भी अनुभव में आता है। पर एक भाव अत्यंत सूक्ष्म है - ज्ञाता भाव। यह तब जन्म लेता है, जब व्यक्ति अनुभव करता है कि वह समझ गया है। वह जान गया है। वह आगे बढ़ चुका है। यहीं से आध्यात्मिक प्रमाद प्रारंभ होता है।

1. ज्ञान और ज्ञाता में अंतर : ज्ञान एक प्रक्रिया है। ज्ञाता एक पहचान है। जब व्यक्ति कहता है-"मुझे यह समझ में आया," तो यह स्वाभाविक है। पर जब वह कहता है-"मैं जानने वाला हूँ," तो पहचान बन जाती है। यहीं सूक्ष्म अहंकार जन्म लेता है।

2. अनुभव का जाल : आध्यात्मिक अनुभव शक्तिशाली होते हैं। शांति का अनुभव। ऊर्जा का अनुभव। आनंद का अनुभव। अहंकार के पिघलने का अनुभव। पर यदि अनुभव पहचान बन जाए, तो वह बाधा बन सकता है। व्यक्ति उस अनुभव को पकड़ना चाहता है। वह उसे दोहराना चाहता है। वह स्वयं को उसी से परिभाषित करता है। यह पकड़ ही प्रमाद है।

3. "मैं समझ गया" का भ्रम : जब व्यक्ति सोचता है कि उसने सत्य को जान लिया, तो खोज रुक जाती है। वह दूसरों को सुधारने लगता है। वह स्वयं को मार्गदर्शक मानने लगता है। वह अपने भीतर की सूक्ष्म परतें देखना बंद कर देता है। यह रुकना ही गिरावट की शुरुआत है।

4. ज्ञाता भाव और तुलना : ज्ञाता भाव तुलना को जन्म देता है। "मैं अधिक जागरूक हूँ।", "मैंने गहरा अनुभव किया है।", "मैं आगे हूँ।", यह तुलना आध्यात्मिक अहंकार का संकेत है। जहाँ तुलना है, वहाँ अभी 'मैं' जीवित है।

5. गिरावट का महत्व : आध्यात्मिक मार्ग में गिरावट अक्सर ज्ञाता भाव के कारण आती है। जब सजगता कम होती है और पहचान बढ़ती है, तो भीतर असंतुलन उत्पन्न होता है। यह गिरावट असफलता नहीं-संकेत है। संकेत कि कहीं सूक्ष्म अहंकार सक्रिय है।

6. शरीर और ज्ञाता भाव : ज्ञाता भाव केवल विचार नहीं है। वह शरीर में भी दिख सकता है। छाती में हल्की कठोरता-"मैं सही हूँ" का भाव। गर्दन में जकड़न-"मेरा दृष्टिकोण सही है।" श्वास की नियंत्रित लय-अनुभव को पकड़े रखने का प्रयास। जब अनुभव स्वाभाविक न होकर संरक्षित हो, तो सजगता कम हो जाती है।

7. जानना बनाम देखना : सच्चा ज्ञान स्थिर नहीं होता। वह जीवित होता है। जो वास्तव में देख रहा है, वह कभी पूर्ण नहीं मानता कि "मैं जान चुका हूँ।" वह हर क्षण नया है। वह हर क्षण खुला है। ज्ञाता भाव बंद करता है। साक्षी भाव खुला रखता है।

8. सूक्ष्म पहचान की जाँच : स्वयं से पूछें-क्या मैं अपनी समझ से जुड़ा हूँ? क्या मैं अपने अनुभव को दोहराना चाहता हूँ? क्या मैं स्वयं को आगे मानता हूँ? यदि उत्तर "हाँ" है, तो सूक्ष्म ज्ञाता भाव सक्रिय है।

9. नम्रता की वापसी : ज्ञाता भाव का उपचार है-नम्रता। नम्रता का अर्थ स्वयं को छोटा मानना नहीं है। नम्रता का अर्थ है-खुले रहना। "मैं अभी भी सीख रहा हूँ।", "मैं अभी भी देख रहा हूँ।", "मैं अभी भी पूर्ण नहीं हूँ।", यह दृष्टि सजगता को जीवित रखती है।

10. अंतिम स्पष्टता : ज्ञाता भाव आध्यात्मिक प्रमाद का रूप है। जब पहचान ज्ञान से जुड़ती है, तो देखने की प्रक्रिया रुक जाती है। जब देखने की प्रक्रिया जीवित रहती है, तो प्रमाद प्रवेश नहीं कर पाता। अगले अध्याय में हम समझेंगे-सूक्ष्म अहंकार को कैसे पहचाना जाए और उसकी परतें कैसे खुलती हैं। (क्रमशः)

गौरवशाली जैन साहित्यसेवी श्रृंखला...

अहिंसा के उपासक, जैन साहित्य के साधक : डॉ. एम. वीरप्पा मोइली

कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. Veerappa Moily ने राजनीति के साथ-साथ जैन साहित्य के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय योगदान दिया है। जैन धर्म के अहिंसा, त्याग, संयम और आत्मविजय जैसे शाश्वत सिद्धांतों से प्रेरित होकर उन्होंने अपने जीवन और लेखन दोनों को एक विशिष्ट दिशा प्रदान की।

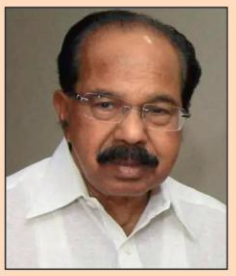

उनकी प्रमुख कृति 'बाहुबली अहिंसा दिग्विजयम्' जैन साहित्य की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जाती है। इस महाकाव्य में Bahubali के वैराग्य, तप, त्याग और आत्मसंयम को अत्यंत प्रभावशाली एवं काव्यात्मक शैली में प्रस्तुत किया गया है। मोइली ने इस रचना के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि सच्ची विजय बाहरी राज्य या शक्ति प्राप्त करने में नहीं, बल्कि अपने भीतर के क्रोध, मान, माया और लोभ जैसे विकारों पर विजय पाने में निहित है।

जैन दर्शन के "अहिंसा परमो धर्मः" सिद्धांत को आत्मसात करते हुए उन्होंने अपने जीवन में भी सादगी, शुचिता और शाकाहार को अपनाया। यह केवल वैचारिक नहीं, बल्कि व्यवहारिक रूप से जैन मूल्यों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

डॉ. मोइली का यह साहित्यिक योगदान जैन धर्म की गूढ़ शिक्षाओं को सरल भाषा में जनसामान्य तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम बना है। उनका लेखन न केवल आध्यात्मिक प्रेरणा देता है, बल्कि समाज को शांति, सह-अस्तित्व और नैतिकता के मार्ग पर चलने का संदेश भी प्रदान करता है।

इस प्रकार, डॉ. वीरप्पा मोइली आधुनिक युग में जैन साहित्य और दर्शन के एक महत्वपूर्ण संवाहक के रूप में स्थापित होते हैं, जिनका कार्य जैन परंपरा के संरक्षण और प्रसार में सदैव स्मरणीय रहेगा। (प्रस्तुति - डॉ. अमित राय जैन)

जैन दर्शन के विदेशी विद्वान

मानवविज्ञानी एड्गर थर्स्टन की दृष्टि में जैन धर्म की ऐतिहासिक जड़ें

- प्रोफेसर डॉ. आंचल जैन

भारतीय संस्कृति और समाज को समझने का प्रयास केवल भारतीय विद्वानों ने ही नहीं किया, बल्कि अनेक विदेशी चिंतकों और शोधकर्ताओं ने भी किया। जैन समाज के संबंध में भी कई विदेशी विद्वानों ने महत्वपूर्ण कार्य किया, जिनकी दृष्टि आज इतिहास और समाजशास्त्र के अध्ययन में उपयोगी सिद्ध हो रही है। इसी कड़ी में ब्रिटिश मानवविज्ञानी एड्गर थर्स्टन का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

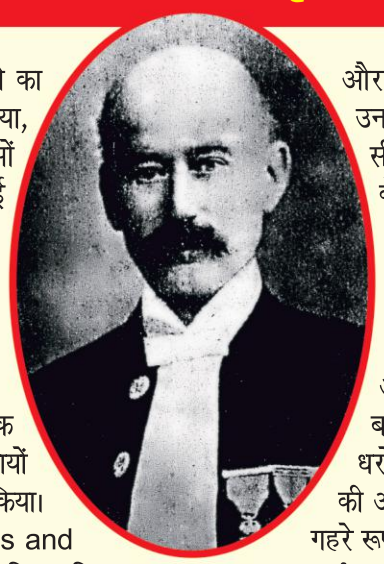

एड्गर थर्स्टन मद्रास म्यूजियम के अधीक्षक रहे और उन्होंने दक्षिण भारत की जातियों, समुदायों और सांस्कृतिक परंपराओं पर व्यापक शोध किया। उनकी प्रसिद्ध सात खंडों वाली कृति Castes and Tribes of Southern India आज भी सामाजिक इतिहास और नृविज्ञान के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण संदर्भ ग्रंथ मानी जाती है। थर्स्टन ने केवल जातीय अध्ययन ही नहीं किया, बल्कि दक्षिण भारत में जैन धर्म के ऐतिहासिक प्रभाव, सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक विरासत को भी गंभीरता से समझने का प्रयास किया।

बंट समाज और जैन परंपरा-थर्स्टन के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण पक्ष तुलुनाडु क्षेत्र के बंट समुदाय और जैन धर्म के बीच संबंधों का विश्लेषण है। उनके अनुसार दक्षिण कन्नड़ के अनेक बंट परिवार मूलतः जैन परंपरा से जुड़े हुए थे। उन्होंने उल्लेख किया कि लंबे समय तक जैन और बंट समुदायों के बीच कोई कठोर सामाजिक विभाजन नहीं था। उच्चवर्गीय बंट परिवारों में जैन रीति-रिवाजों और नैतिक मूल्यों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता था और ऐसे परिवारों को 'जैन बंट' कहा जाता था। थर्स्टन ने यह भी रेखांकित किया कि जैन धर्म ने केवल धार्मिक जीवन को ही नहीं, बल्कि सामाजिक व्यवहार, व्यापारिक नैतिकता और पारिवारिक संरचना को भी प्रभावित किया। उनके अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि जैन संस्कृति दक्षिण भारत के सामाजिक जीवन में गहराई तक समाहित थी।

अळियसंतान व्यवस्था और जैन प्रभाव : दक्षिण भारत के जैन राजवंशों द्वारा अपनाई गई 'अळियसंतान' व्यवस्था का भी थर्स्टन ने विशेष उल्लेख किया है। इस व्यवस्था के माध्यम से संपत्ति और सत्ता का उत्तराधिकार मातृवंशीय आधार पर संचालित होता था। थर्स्टन के अनुसार यह सामाजिक संरचना जैन समाज की स्थिरता और संगठन को मजबूत करने में सहायक बनी। उनकी दृष्टि में जैन धर्म केवल पूजा-पद्धतियों तक सीमित नहीं था, बल्कि वह एक सामाजिक शक्ति के रूप में कार्य कर रहा था, जिसने तटीय कर्नाटक की सामाजिक संरचना को स्थायित्व प्रदान किया।

जैन वास्तुकला और अहिंसा की संस्कृति : दक्षिण भारत की जैन धरोहरों ने भी थर्स्टन को अत्यंत प्रभावित किया। उन्होंने सहस्र स्तंभ बसदि तथा गोम्मटेश्वर जैसी ऐतिहासिक जैन धरोहरों का उल्लेख करते हुए लिखा कि जैन धर्म की अहिंसात्मक जीवन-दृष्टि ने स्थानीय समाज को गहरे रूप में प्रभावित किया है।

थर्स्टन का मानना था कि जैन समुदाय अपनी अनुशासित जीवनशैली, व्यापारिक ईमानदारी और शांतिप्रिय स्वभाव के कारण समाज में विशेष सम्मान प्राप्त करता है। यह टिप्पणी उस समय के औपनिवेशिक विद्वानों के बीच जैन समाज के प्रति विद्यमान सकारात्मक दृष्टिकोण को भी दर्शाती है।

कृषक समाज और जैन संस्कृति : थर्स्टन ने कर्नाटक के कृषक समुदायों और जैन धर्म के ऐतिहासिक संबंधों की ओर भी संकेत किया। विशेष रूप से गंग राजवंश के काल में कृषि संस्कृति और जैन धर्म के परस्पर विकास का उल्लेख उनके अध्ययन में मिलता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि जैन धर्म केवल शहरी व्यापारिक वर्ग तक सीमित नहीं था, बल्कि ग्रामीण और कृषक समाज में भी उसका प्रभाव व्यापक था।

विदेशी विद्वान होने के बावजूद एड्गर थर्स्टन ने भारतीय समाज और विशेषतः जैन धर्म के अध्ययन में उल्लेखनीय ईमानदारी और गहराई का परिचय दिया। उनके लेखन से यह प्रमाणित होता है कि जैन धर्म दक्षिण भारत की सांस्कृतिक आत्मा का अभिन्न अंग रहा है।

आज जब भारतीय समाज अपनी सांस्कृतिक जड़ों की पुनस्मृति कर रहा है, तब ऐसे विदेशी विद्वानों के अध्ययन हमें यह समझने में सहायता करते हैं कि जैन दर्शन केवल एक धर्म नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता की नैतिक और सांस्कृतिक चेतना का एक महत्वपूर्ण आधार रहा है।

जैन समाज में बच्चों के विवाह की वर्तमान स्थिति

आज के समय में हमारे समाज के हजारों परिवार एक समान समस्या का सामना कर रहे हैं - योग्य रिश्ते समय पर नहीं मिल पाना। किसी को अधिक धन चाहिए, किसी को विशेष पेशा, किसी को बड़ी गाड़ी, किसी को बड़ा मकान, किसी को इंजीनियर या सीए, तो किसी को रूप-रंग, कद-काठी आदि अनेक अपेक्षाएँ।

फिर दिगंबर, श्वेताम्बर, तेरापंथी, स्थानकवासी जैसे उपविभागों के आधार पर भेद। इन अनगिनत शर्तों के कारण कई घरों में बच्चे 30-40 वर्ष की आयु तक अविवाहित रह जाते हैं। आज भी कुछ लोग "छोटे साजन" और "बड़े साजन" जैसे भेद को लेकर बैठे हैं, जबकि समय बदल चुका है। हजारों रिश्ते इन सीमाओं से ऊपर उठकर हो चुके हैं और परिवार सुखी जीवन जी रहे हैं। यदि अंत में हमें यही स्वीकार करना है, तो प्रारंभ से ही व्यापक सोच क्यों न अपनाएँ? समाज की एकता और बच्चों के उज्ज्वल भविष्य को प्राथमिकता देना ही समय की मांग है। आइए, संकीर्ण विचारों को छोड़कर जैन समाज की एकता को मजबूत करें। अनावश्यक भेदभाव और शर्तों को समाप्त करें। (व्हाट्ऐप ग्रुप से साभार)

(पृष्ठ 1 का शेष 'अध्यक्षीय') बल्कि समाज के प्रति अपने दायित्वों को भी पूर्ण निष्ठा से निभाएगी। आइए, हम सब मिलकर यह संकल्प लें कि संस्कारों की इस ज्योति को प्रत्येक बाल-हृदय तक पहुँचाएँगे। यही हमारे समाज की सच्ची सेवा है, यही भविष्य के निर्माण की सबसे सशक्त दिशा है। आप सभी से अपेक्षा है कि इस पुनीत अभियान में सक्रिय सहभागिता निभाते हुए अपने क्षेत्र में संस्कार निर्माण शिविरों के आयोजन का बीड़ा उठाएँ और एक सशक्त, संस्कारित एवं संगठित समाज के निर्माण में अपना अमूल्य योगदान दें।

(पृष्ठ 1 का शेष 'सम्पादकीय')

मेरा यह स्पष्ट मत है कि किसी भी राजनीतिक दल को अपनी विचारधारा से समझौता कर तात्कालिक लाभ प्राप्त करने की बजाय दीर्घकालिक विश्वास और नैतिकता को प्राथमिकता देनी चाहिए। अहिंसा और करुणा केवल भाषणों के विषय नहीं, बल्कि जीवन और राजनीति में आत्मसात करने योग्य मूल्य हैं।

अंततः, यह प्रश्न केवल मांसाहार या शाकाहार का नहीं, बल्कि राजनीतिक चरित्र, सांस्कृतिक संवेदनशीलता और नैतिक प्रतिबद्धता का है-जिस पर देश की लोकतांत्रिक आत्मा टिकी हुई है।

संस्कार भारती, वाणी भूषण महासाध्वी पू. श्री प्रीतिसुधा जी म. : श्रद्धांजलि

आचार्यश्री जी की ओर से संवेदना पत्र

कलाप्रेमी, महासाध्वी श्री अरुणप्रभा जी म.सा., संकल्पमूर्ति, कोकिलकंठी महासाध्वी श्री मधुस्मिता जी म.सा., व्यवहारकुशल महासाध्वी श्री मंगलप्रभा जी म.सा., सादर हार्दिक सुखशांति पृच्छा। अत्र विराजित आदि ठाणा 10 की ओर से तत्र विराजित समस्त चारित्रात्माओं को सादर हार्दिक सुखशांति पृच्छा।

यह समाचार प्राप्त हुए कि महाश्रमणी संस्कार भारती महासाध्वी श्री प्रीतिसुधा जी म.सा. का दिनांक 1 मई 2026 को रात्रि 01 बजकर 12 मिनट पर संथारे के साथ पुणे (महाराष्ट्र) में भव परिवर्तन हो गया।

एक आत्मार्थी साधक का मनोरथ होता है कि अन्तिम समय समाधि-मरण प्राप्त हो। संथारे का अर्थ है देहासक्ति छोड़कर आत्मा की अनुभूति करना। आत्मा और शरीर की भिन्नता का अहसास करते हुए समतापूर्वक शरीर को छोड़ना। संथारा भेद-विज्ञान की उत्कृष्ट साधना है। साधु का तीसरा मनोरथ है कि अन्तिम समय समाधिपूर्वक आत्मार्थ को सिद्ध करते हुए शरीर को छोड़ा जाए। साध्वीजी ने यह मनोरथ पूर्ण किया।

साध्वी जी के जीव ने इस भव में 83 वर्ष की आयु में एवं 64 वर्ष के संयम काल में जप, तप, स्वाध्याय, मौन, सेवा से जो कर्म क्षय किए तथा जो-जो क्षण कर्म निर्जरा में व्यतीत किए उनकी हम अनुमोदना करते है। उन्होंने अपने जीवन के 64 बसंत संघ, समाज और आत्मिक उत्थान हेतु जिनशासन की प्रभावना में उत्साहपूर्वक लगाये एतदर्थ हार्दिक साधुवाद।

साध्वी जी का जीवन संयम, स्वाध्याय, जप, तप, गुरु-भक्ति से परिपूर्ण था। वे भजन बनाने में सिद्धहस्त थे। उन्होंने अपने जीवन में संस्कार, गौ-रक्षा, देश के नैतिक उत्थान एवं जिनवाणी के प्रसार में जो सेवाएँ दी हैं वे अनुकरणीय एवं अभिनन्दनीय हैं। उनके जीवन में सरलता, आत्मीयता, प्रेम, सद्भावना साकार हो उठी थी। उनके भीतर जैन कला और संस्कृति को लेकर एक तड़फ थी।

सन् 1986 में मेरा उनसे प्रथम बार मिलन पुणे में हुआ। उनके प्रवचन, भजन की चर्चा महाराष्ट्र ही नहीं सम्पूर्ण देश में फैली हुई थी। उनके ऊपर सरस्वती की अपार कृपा थी उसी के बल पर उन्होंने अनेक अनुमोदनीय, अभिनन्दनीय, अनुकरणीय धार्मिक कार्य सम्पन्न किये। उन्होंने अपनी विद्वत्ता के द्वारा जन-जन को जैन धर्म से जोड़ा।

वर्ष 2019 में जब उनसे पूना में मिलन हुआ तब उनकी आत्म ध्यान साधना की तीव्र प्यास देखने को मिली। वे प्रतिदिन आत्म ध्यान साधना स्वयं करते एवं अपनी शिष्याओं को भी प्रेरित करते रहते। उन्होंने अपने जीवन काल में अपने माताजी महाराज महासाध्वी श्री सुशीलकंवर जी म.सा. से प्रेरित होकर संयम आराधना में आचार्य सम्राट पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म.सा. के श्रीचरणों में रहते हुए भक्ति एवं ज्ञान के समन्वय द्वारा धर्म एवं अध्यात्म की खूब प्रभावना की।

अपने जीवन में उन्होंने अनेक ज्येष्ठ-श्रेष्ठ साधु-साध्वीवृन्द की सेवा का लाभ लिया। उनकी श्रद्धा, आत्मीयता अभिनन्दनीय थी। वे संयम के प्रति जागरुक साध्वी रत्ना थी। पिछले कुछ समय से उनको स्वास्थ्य की प्रतिकूलता थी, परंतु उनकी समता अनुमोदनीय थी। उन्होंने उत्कृष्टता से संयमी जीवन जीने का पुरुषार्थ किया।

साध्वी जी के भव परिवर्तन से जिनशासन की गौरवमयी परम्परा में एक महान साध्वीरत्ना की क्षति हुई है। उनके जीव की यात्रा वीतरागता की ओर आगे बढ़ते हुए अपने लक्ष्य सिद्धत्व को प्राप्त करें।

सेवा में विराजित कलाप्रेमी महासाध्वी श्री अरुणप्रभा जी म.सा., कोकिलकंठी महासाध्वी श्री मधुस्मिता जी म.सा., व्यवहार कुशल महासाध्वी श्री मंगलप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री जयस्मिता जी म. सा., साध्वी श्री विजयस्मिता जी म.सा., साध्वी श्री प्रेरणा जी म.सा., साध्वी श्री प्रज्ञा जी म.सा., साध्वी श्री संयमप्रीति जी म.सा., साध्वी श्री संबोधि जी म.सा., साध्वी श्री ह्रीं प्रीति जी म.सा., साध्वी श्री श्री प्रीति जी म.सा., साध्वी श्री विधि जी म.सा. आदि समस्त साध्वीवृंद ने एवं साधिका निमाताई, सुरेखाताई, विद्याताई, श्रीनिवास भाई ने समय-समय पर उनकी खूब सेवा भक्ति का लाभ लिया। एतदर्थ हार्दिक कृतज्ञता एवं साधुवाद।

श्री सकल जैन संघ पुणे, श्री क्षेत्रपाल प्रतिष्ठान, लोणीकंद, मातृतीर्थ, देवलाली कैंप, नाशिक के सभी कार्यकर्ता एवं गुरुभक्तों ने जो महासाध्वी जी की सेवा का लाभ लिया वह अनुकरणीय एवं अनुमोदनीय है।

आप सभी इस परम सत्य को स्वीकार करते हुए त्याग, वैराग्य व वीतरागता की प्रेरणा प्राप्त करें।

मंगलमैत्री के साथ,
आचार्य शिवमुनि

स्मृति शेष श्रद्धांजलि

संस्कार भारती वाणी भूषण पू. श्री प्रीतिसुधा म. का संथारापूर्वक देवलोक गमन

पुणे (महाराष्ट्र) : दिनांक 01.05.2026, शुक्रवार प्रातः 1:12 बजे संस्कार भारती वाणी भूषण पू. श्री प्रीतिसुधा म. का 83वर्ष की आयु में संथारापूर्वक देवलोकगमन। उनका दीक्षा पर्याय 65 वर्ष का था। उनकी प्रेरणा से कई गौशालाओं का निर्माण हुआ। पुणे के लोणीकंद में क्षेत्रपाल प्रतिष्ठान की प्रेरणा से स्थापित हुई। उनके नाम से कई संस्थाओं ने विद्यालय खुलवाएं तथा अनेक लोक उपयोगी संस्थाओं का निर्माण किया। महासती जी का जन्म नासिक के नजदीक पिंपलगांव बसवंत नामक ग्राम में हुआ। उम्र के 14वें वर्ष में उन्होंने दीक्षा ग्रहण की। उनके देवलोकगमन से श्रमण संघ की बहुत बड़ी क्षति हुई है। जैन कॉन्फ्रेंस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पारस मोदी जैन, राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक श्री विजयकांत कोठारी जैन, हर प्रांत जैन भवन योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अशोककुमार पगारिया जैन, राष्ट्रीय मंत्री विलास राठोड़ जैन, पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री पोपटलाल ओस्तवाल जैन, पंचम जोन अध्यक्ष श्री नितिन बेदमुथा जैन, पूर्व राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री सागर सांखला जैन तथा श्री सतीश सुराणा जैन, नितिन चोपड़ा जैन आदि सैकड़ों श्रद्धालुओं सहित जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय पदाधिकारियों सहित श्रद्धांजलि अर्पित की।

वाणीभूषण श्री प्रीति सुधा जी महाराज

स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की एक युगांतरकारी प्रभावशालिनी महासाध्वी का निधन

– डॉ. अमित राय जैन

आज अचानक महाराष्ट्र स्थानकवासी जैन ऋषि परंपरा की पूजनीय महासाध्वी श्री प्रीतिसुधा जी महाराज के पुणे महानगर में देवलोकगमन हो जाने के समाचार सुनकर गहरा धक्का लगा। इसी महीने के अंत में मेरा महाराष्ट्र के पुणे-अहमदनगर में विराजित साधु-साध्वियों के दर्शन एवं वंदन हेतु जाने का कार्यक्रम था, उसमें विशेष भावना थी की पूज्य साध्वी श्री प्रीतिसुधा जी महाराज के दर्शन अवश्य करूंगा क्योंकि पिछले एक वर्ष से लगातार उनके अस्वस्थ होने के समाचार प्राप्त हो रहे थे।

महासाध्वी जी का जीवन अत्यंत श्रमशील एवं नारी शक्ति का गौरव बढ़ाने वाला रहा है। उन्होंने भरपूर जवानी में अपनी बहन और पूज्य माता जी के साथ जैन सन्यास (साध्वी दीक्षा) ग्रहण की। जीवन में उच्चतम गौरव के शिखर भी छुए, वहीं विपरीत परिस्थितियों में भी आपने, अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति एवं आत्मबल के कारण अपनी साध्वी परंपरा का गौरव बढ़ाने का काम किया।

आपश्री ने वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ में आचार्य भगवंत पूज्य श्री आनंदऋषि जी महाराज के चरणों का अवलंबन ग्रहण करके संपूर्ण भारतवर्ष में व्याप्त स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के बड़े-बड़े महानगरों के श्री संघों में चातुर्मास एवं प्रवास अत्यंत गौरवपूर्ण तरीके से करके श्रमण संघ का सम्मान बढ़ाया। आपमें प्रवचन की अद्भुत कला थी। ज्ञान की देवी माँ सरस्वती स्वयं आपकी जिव्हा पर विराजमान होकर संपूर्ण श्रोतावर्ग को अपने आगोश में ले लेती थी। आपके प्रवचन आम जनसाधारण के लिए अत्यंत प्रेरणादायक सिद्ध हुए। आपके कंठ से निकले हुए भजनों ने हजारों-लाखों श्रावक-श्राविकाओं के जीवन में युगांतरकारी परिवर्तन किए।

साध्वीरत्ना वाणीभूषण श्री प्रीतिसुधा जी महाराज से मेरा स्वयं का व्यक्तिगत अत्यंत प्रेमपूर्ण पारिवारिक श्रद्धा संबंध रहा है। सन् 1973 में पूज्य आचार्य भगवंत श्री आनंदऋषि जी महाराज के आदेश से आपने, अपनी पूज्य माताजी महाराज एवं अन्य साध्वीमंडल के साथ मेरी जन्मभूमि बड़ौत नगर में किए गए चातुर्मास के दौरान यहाँ के नवयुवकों में अद्भुत समाजसेवा के प्रति श्रद्धा एवं निष्ठा पैदा की। मेरे पूज्य दादाजी ला. शहजाद राय जी जैन जो कि उस समय श्रीसंघ के प्रमुखतम पदाधिकारी थे, उनकी व्यक्तिगत डायरी में उस चातुर्मास की बहुत सी घटनाएं तथा विशेष धार्मिक आयोजनों के नोट्स अंकित हैं, से पता चलता है कि उनके रात्रि कालीन प्रवचनों की सार्वजनिक श्रृंखला में हजारों श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ती थी। आपके द्वारा की गई स्थानकवासी जैन परंपरा की प्रभावना अपने आपमें अद्वितीय और अद्भुत रही है।

आपके संलेखना संथारापूर्वक किया गया समाधिमरण अत्यंत प्रेरणादायक है। मैं आपके संयम जीवन के प्रति हार्दिक संवेदना के साथ विनम्र श्रद्धांजलि प्रकट करता हूँ और आपके शोक संतप्त साध्वी परिवार के लिए भी संवेदना व्यक्त करता हूँ।

ALDACO
AIM HIGH

Sudershan Jain
National Chairman – Jan Kalyan Yojana
Jain Conference, New Delhi

DEALS IN NON LEATHER FOOTWEAR
ALDACO FOOTWEAR

9310899901 | Aldacofootwear@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

श्रमण संघीय युवाचार्य श्री महेंद्रऋषि जी म. आदि ठाणा का राजस्थान में मंगल प्रवेश

श्रद्धा, भक्ति और उत्साह का उमड़ा जन शैलाब

निम्बाहेड़ा (राजस्थान) : युवाचार्य परम पू. श्री महेंद्रऋषि जी म. के निम्बाहेडा मंगल प्रवेश पर मेवाड़ उपप्रवर्तक श्री कोमलमुनि जी म. आदि ठाणा, प्रखर वक्ता रविंद्रमुनि म., उपप्रवर्तनी महासती श्री मंजुलज्योति जी म. आदि ठाणा 5, पू. श्री शीतलज्योति जी म., आदि ठाणा संत-सतियों की उपस्थिति में दिनांक 1 मई को दिवाकर भवन निम्बाहेड़ा में प्रवेश हुआ। इस अवसर पर सैंकड़ो श्रावक - श्राविका की उपस्थिति में युवाचार्य महेंद्रऋषि जी म. का प्रवेश हुआ।

कार्यक्रम का प्रारंभ मंगलाचरण से हितमित भाषी पू. श्री हितेंद्रऋषि जी म. द्वारा किया गया। सभी ने तिक्खुतों के पाठ से तीन बार गुरुओं को वंदन किया और हर्षित मुनी जी रविंद्रमुनि जी म., श्री कोमलमुनि जी म. आदि ने युवाचार्यश्री के मेवाड़ आगमन पर शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस राजस्थान प्रांतीय अध्यक्ष श्री आनंद चपलोत, प्रांतीय महिला अध्यक्षा डॉ. पुष्पा जैन खोखावत, कोषाध्यक्षा अंगूरबाला भडकतिया, निर्मल सिंघवी, जीवदया योजना अध्यक्ष रमेश खोखावत, मंजु सिरोया, जीवनलाल सिरोया, कमला चौधरी, मंजु खटवड़ आदि उपस्थित रहे।

युवाचार्यश्री जी का समीर गुरु पावन धाम अहिंसानगर चित्तौड़ में आगमन

अहिंसानगर (राजस्थान) : श्रमण संघीय युवाचार्य प्रवर पूज्य श्री महेन्द्रऋषि जी म., मेवाड़ उप-प्रवर्तक पू. श्री कोमलमुनि जी म., हितमित भाषी पू. श्री हितेन्द्रऋषिजी म. आदि ठाणा सोमवार प्रातः शम्भुपुरा जैन स्थानक से विहार कर समीर गुरु पावन धाम अंहिसानगर पहुंचे। विहार यात्रा मे चित्तौड़गढ़ शहर सहित निम्बाहेंडा, बेंगु आदि क्षेत्रों से श्रावक-श्राविकाओं ने युवाचार्य बनने के बाद प्रथम बार आगमन पर अपार उत्साह के साथ शक्ति-भक्ति की नगरी चित्तौड़गढ़ में वंदन अभिनंदन के साथ आगवानी की।

प्रेषक : पवन जैन पटवारी

मधुर मिलन

लुधियाना (पंजाब) : 01 मई 2026 को सलाहकार प्रवर पूज्य श्री दिनेश मुनि जी म. का शासन चंद्रिका उप-प्रवर्तिनी महासाध्वी श्री वीरकांता जी म. आदि ठाणा-6 एवं तपचन्द्रिका महासाध्वी श्री सुनिधि जी म. ठाणा-4 से टोमडी, लुधियाना में मधुर मिलन हुआ।

स्मृति शेष श्रद्धांजलि

पू. श्री चंदनप्रभा जी म. का देवलोकगमन

बैंगलोर (कर्नाटक) : श्रमण संघीय पुष्कर कुल शिष्या, उप-प्रवर्तिनी पूज्या सत्यप्रभाजी म. की सुशिष्या, तपस्विनी पूज्या साध्वी श्री चंदनप्रभाजी म. का दिनांक 8 मई 2026 को संथारा सहित देवलोकगमन हो गया। आगम ज्ञाता पूज्य श्री समकित मुनि जी म. एवं पूज्या गुरुणी श्री सत्यप्रभाजी म. द्वारा पावन पच्चखान सम्पन्न कराए गए थे। पूज्य साध्वीजी की स्वास्थ्य सेवा एवं अंतिम समय की आराधना श्री गुरु ज्येष्ठ पुष्कर जैन आराधना केंद्र, बैंगलोर में चल रही थी। उनका विछोह सम्पूर्ण संघ एवं समाज के लिए अत्यंत दुःखद एवं अपूरणीय क्षति है। वीर प्रभु परमात्मा से विनम्र प्रार्थना है कि पूज्य आत्मा अनंत सुख, शाश्वत शांति एवं उत्तम गति की भागी बने। प्रेषक : प्रकाश बुरड़ जैन

श्रीमान् देवीचंद जी मुणोत जैन का निधन

के.जी.एफ. (कर्नाटक) : श्रीमान् देवीचंद मुणोत जैन का दिनांक 01.05.2026 को आकस्मिक निधन हो गया। आपका संपूर्ण परिवार साधर्मिक बंधुओं एवं पूज्य साधु-संतों की सेवा में अग्रणी रहते हुए सेवाएं प्रदान करता आ रहा है।

प्रेषक : प्रवीण मुणोत जैन

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

जैन कॉन्फ्रेंस मध्य प्रदेश शाखा द्वारा अक्षय तृतीया पारणे का आयोजन

इन्दौर (मध्य प्रदेश) : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस मध्य प्रदेश प्रांतीय शाखा द्वारा अक्षय तृतीया के पारणे का आयोजन वर्षीतप तपस्वियों के लिए किया गया। जिसमें लगभग 80 तपस्वियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर प्रवर्तक पू. श्री प्रकाश मुनि जी म. सामायिक एवं स्वाध्याय के प्रणेता पू. श्री शीतलराज जी म., अभिग्रहधारी पू. श्री राजेशमुनि जी म., सरल स्वभावी पू. श्री सौरभमुनि जी म. एवं साध्वी पू. श्री मंगलप्रभा जी म., महासती पू. श्री रमणीक कुंवर जी म. एवं सती मंडल द्वारा सभा को संबोधित किया गया। मध्य प्रदेश शाखा के प्रांतीय अध्यक्ष श्री हुल्लास बेताला जैन ने सभी तपस्वियों की सुखसता पूछते हुए इस कार्यक्रम में सहयोग प्रदान करने वाले सभी दानदाताओं का आभार माना। कार्यक्रम के मुख्य संयोजक श्री प्रकाश भटेवरा जैन न कार्यक्रम की रूपरेखा स्पष्ट करते हुए सभी तपस्वी एवं आगंतुक अतिथियों को धन्यवाद दिया। कार्यक्रम का संचालन प्रांतीय महामंत्री श्री पीयूष जैन ने किया।

इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री महेश डाकोलिया जैन, राष्ट्रीय मंत्री श्री जिनेश्वर जैन, श्री राजेंद्र लोढ़ा जैन, श्री ललित छलानी जैन, श्री अरुण जैन, श्री हेमंत बोरा जैन, अशोक मंडलिक जैन, श्री सुभाष विनायका जैन, श्री अशोक डांगी जैन, वीरेंद्र सुराणा जैन, श्री राजेश झामड़ जैन, श्री राकेश सेठ आदि वरिष्ठ समाजसेवी उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में जैन कॉन्फ्रेंस विश्वस्त मण्डल चेयरमैन श्री रमेश भंडारी जैन का प्रमुख सहयोग एवं मार्गदर्शन मिला, जिससे यह कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। प्रमुख दानदाताओं में राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक श्री डीपिन जैन, श्री अचल चौधरी, डॉ. राजीव जैन, श्री प्रकाश भटेवरा जैन, श्री राजेश मेहता जैन, श्री अखिल चौधरी, श्री विक्रम श्रीमाल, श्री धवल सांड आदि का मुख्य सहयोग प्राप्त हुआ।

प्रेषक : पीयूष जैन

देश में विराजित पूज्य संत-साध्वीजी म. के पावन चरणों में
कोटि-कोटि वंदन एवं श्रद्धापूर्ण नमन

समाजरत्न दानवीर भामाशाह
लाला आनन्द प्रकाश जी जैन
महिलारत्न
स्व. श्रीमती कमलेश आनन्द प्रकाश जी जैन

NAMO eWaste

Namo e waste Management Ltd.
E waste & lithium in battery recycling
EPR facility
8130393628 admin@namoewaste.com

Vardhman Recycling LLP
Old vehicles recycling with certificate of disposal
Plastic recycling EPR facility
8130393611 vardhmanautorecycling@gmail.com

नरेश आनन्दप्रकाश जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
ज्ञान प्रकाश योजना, जैन कॉन्फ्रेंस

रचना नरेश जैन
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक
जैन कॉन्फ्रेंस, राष्ट्रीय महिला शाखा

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय सभाओं का आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न

नई दिल्ली : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली की राष्ट्रीय प्रबंध समिति सभा, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा एवं साधारण सभा का आयोजन जैन भवन, नई दिल्ली में राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय श्री अतुल जैन की अध्यक्षता में देशभर से पधारे जैन कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारियों की उपस्थिति में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई।

तीनों ही सभाओं में निर्धारित सभी विषयों पर उपस्थित सदस्यों ने सकारात्मक चर्चा एवं विचार-विमर्श करते हुए अपने सुझाव प्रस्तुत किए। तीनों ही सभाओं के मुख्य विषय संविधान संशोधन/नियम-उपनियम समिति द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रारूप को सदस्यों द्वारा कुछ सुझावों एवं विचार-विमर्श के साथ सकारात्मक रूप से सर्वसम्मति से पास कर दिया गया। सभाओं का सफल संचालन राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अमितराय जैन ने किया। इन सभाओं में मुख्य रूप से पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे.डी. जैन, श्री पारस मोदी जैन, राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन श्री नरेश बोहरा जैन, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री जसवंत जैन, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री विनय कुमार जैन, राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री महेन्द्र बोकरिया जैन, राष्ट्रीय मुख्य समन्वयक श्री प्रशांत जैन, जोन-1 समन्वयक श्री सुरेशकुमार लुणावत जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री पुखराज मेहता जैन, श्री एम. गौतमचंद गुगलिया जैन, श्री पुष्कर जैन, श्री महावीर प्रसाद जैन, श्री विपिन आनंद प्रकाश जैन, श्री जयकुमार जैन, श्री सुनील चोपड़ा जैन, जीवन प्रकाश योजना राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बाबूलाल रांका जैन, मानव सेवा योजना राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रकाश भटेवरा जैन, ज्ञान प्रकाश योजना राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नरेश आनंद प्रकाश जैन, विहारधाम योजना राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कांतिलाल चोपड़ा जैन, अल्पसंख्यक योजना राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, आत्म-ध्यान योजना राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शशिकांत 'पिन्टू' कर्नावट जैन, हर प्रांत जैन भवन योजना राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोक कुमार एन. पगारिया जैन, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुल जैन, राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संतोष सुरेश जैन आदि अनेक गणमान्यजन सभाओं में उपस्थित हुए।

सभा में मुख्य रूप से जैन कॉन्फ्रेंस की सामाजिक, धार्मिक गतिविधियों में दान देने वाले दानदाताओं श्री अतुल जैन-दिल्ली, जिन्होंने अनेको कार्यक्रमों में अपने परिवार की ओर से दानराशि प्रदान कर सहयोग प्रदान किया। श्री अशोक रांका जैन-बैंगलोर एवं उनकी टीम ने वैय्यावच्च योजना के माध्यम से पूज्य साधु-साध्वी जी म. के सेवकों के सैलरी एवं उनके स्वास्थ्य संबंधी खर्च हेतु एक करोड़ से अधिक की दानराशि एक ही वर्ष में प्रदान की है। श्री बाबूलाल रांका जैन-बैंगलोर एवं टीम जीवन प्रकाश योजना के माध्यम से उच्च शिक्षा एवं चिकित्सा के क्षेत्र में सहयोग प्रदान किया।, श्री नरेश बोहरा जैन-मुंबई जिन्होंने खुले मन से जैन कॉन्फ्रेंस को एक करोड़ रुपये की दानराशि प्रदान करने की घोषणा, ऐसे अनेको दानदाताओं का शॉल, माला, साफा द्वारा स्वागत सम्मान किया गया। गौतम प्रसादी के लाभार्थी मातुश्री ऊषा जैन परिवार वसंतकुंज, महरौली रहे। अंत में प्रांतीय अध्यक्ष दिल्ली प्रदेश श्री जितेन्द्र जैन ने सभा में उपस्थित सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

प्रेषक : राजेश कुमार मिश्र

जैन भवन नई दिल्ली में Let Every Jain Count Campaign की सफल बैठक संपन्न

दिल्ली : शनिवार, दिनांक 2 मार्च 2026 को श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के तत्वावधान में जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय कार्यालय में Census 2027 - Let Every Jain Count Campaign के अंतर्गत एक अवेयरनेस बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में जैन कॉन्फ्रेंस ट्रस्ट बोर्ड चेयरमैन श्री रमेश भण्डारी जैन, कार्यकारी अध्यक्ष श्री जसवंत जैन, राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अमितराय जैन, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुल जैन, राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संतोष जैन, दिल्ली प्रदेश युवा अध्यक्ष श्री विनीत जैन, दिल्ली प्रदेश महिला अध्यक्षा श्रीमती सीमा जैन, कोषाध्यक्षा श्रीमती कनिका जैन उपस्थित रहे। L.E.J.C. की ओर से सौम्या जैन, वैभव जैन-रोहिणी, वैभव जैन-शाहदरा एवं विनीता जैन ने भाग लिया।

यह बैठक ऑफलाइन और ऑनलाइन दोनों रूप में आयोजित की गयी। देशभर से करीब 70 सदस्य ऑनलाइन बैठक का हिस्सा रहे। लगभग सवा घण्टे चली इस बैठक के दौरान विस्तारपूर्वक चर्चा हुई। बैठक के मुख्य बिंदु निम्नलिखित थे :- जनगणना का जैन समाज के लिए महत्व - क्यों यह हमारे समुदाय के भविष्य का आधार है। जनगणना के चरणों एवं Self-Enumeration की भूमिका को समझना, जागरूकता की श्रृंखला बनाना - एक भी जैन परिवार छूटने न पाए, इस लक्ष्य की सुनिश्चितता, युवा एवं महिला प्रकोष्ठ की निर्णायक भूमिका, Phase 2 हेतु तैयारी एवं रणनीति, LET EVERY JAIN COUNT - आइए, अपना योगदान सुनिश्चित करें। बैठक के दौरान कुछ वीडियो भी साझा किये गए और पोर्टल तथा ऑनलाइन टूल्स की विस्तृत जानकारी प्रदान की गयी।

प्रेषक : राजेश मेहरा

श्रीमती सविता रायसोनी जैन को तेलंगाना बीजेपी में पदभार

श्रीमती सविता रायसोनी जैन को तेलंगाना बीजेपी में सह-संयोजक अल्पसंख्यक मोर्चा का पदभार प्रदान किया गया। उनकी इस उपलब्धि पर स्थानकवासी जैन श्रीसंघ हैदराबाद के पदाधिकारी मण्डल एवं महिला मण्डल द्वारा पूज्य श्री कपिल मुनि जी म.के सान्निध्य में उनका हार्दिक अभिनंदन एवं स्वागत किया गया। जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

जैन समाज गौरव रोहित जैन ने संभाला आर.बी.आई. डिप्टी गर्वनर का पदभार

RBI को मिला नया डिप्टी गवर्नर, रोहित जैन ने ली रबी शंकर की जगह; तीन साल का होगा कार्यकाल, उन्हें बैंकिंग जगत का लम्बा अनुभव है, सरकार के विभिन्न पदों पर रहते हुए जैन समाज के इस प्रभावशाली व्यक्तित्व ने आर.बी.आई. डिप्टी गवर्नर पद पर पहुँचकर जैन समाज का गौरव बढ़ाया है, जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं अभिनंदन।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश

PRGI : DLHIN/25/A4261
Postal Regn. No. DL(ND) 11/6078/2026-27-2028
U (C)

Date of Publication : 08-05-2026
Date of Posting : 14/15-05-2026
E-mail : aissjc1906@gmail.com

भाषा : हिन्दी ✲ वर्ष : 70 ✲ अंक : 10
पृष्ठ : 8 ✲ माह : मई ✲ सप्ताह : 08 से 14

मूल्य : ₹ 10

सह-सम्पादक : जसवंत जैन-दिल्ली, पीयूष जैन-इंदौर, गौतम दुगड़ जैन-चेन्नई

पाकिस्तान में स्थानकवासी जैन परंपरा की भूली-बिसरी विरासतें...

वर्तमान पाकिस्तान का कसूर शहर : जहाँ आज भी जीवित हैं स्थानकवासी जैन समाज की स्मृतियाँ!

वर्तमान कसूर का नाम आज भले सीमावर्ती पंजाब के एक ऐतिहासिक नगर के रूप में लिया जाता हो, किंतु इतिहास के पन्नों में यह नगर स्थानकवासी जैन धर्म की एक समृद्ध सांस्कृतिक, धार्मिक और शैक्षिक परंपरा का साक्षी रहा है। विभाजन से पूर्व पश्चिमी पंजाब के जिन नगरों में जैन समाज ने अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित की, उनमें कसूर का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण था। आज वहाँ जैन समाज प्रत्यक्ष रूप से नहीं दिखाई देता, किंतु नगर में अब भी मौजूद पुरानी इमारतें उस गौरवशाली अतीत की मौन गवाही देती हैं।

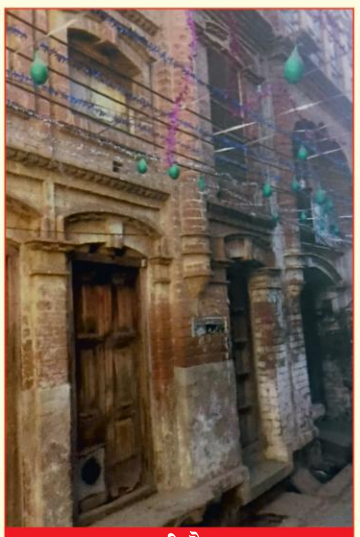

स्थानकवासी जैन जजघर (जैन धर्मशाला) की वर्तमान इमारत

कभी कसूर में स्थानकवासी जैन समाज प्रचुर संख्या में निवास करता था। व्यापार, सामाजिक नेतृत्व, शिक्षा और धर्म-इन सभी क्षेत्रों में जैन परिवारों की उल्लेखनीय उपस्थिति थी। समाज ने केवल आर्थिक समृद्धि ही नहीं अर्जित की, बल्कि अपनी धार्मिक और सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप स्थायी संस्थाओं की स्थापना भी की। यही कारण है कि आज भी कसूर में जैन स्थानक, जैन कन्या पाठशाला तथा जैन जजघर (धर्मशाला) जैसी इमारतें खंडहर के रूप में अस्तित्वमान हैं।

कसूर का जैन स्थानक उस समय समाज की आध्यात्मिक गतिविधियों का केंद्र था। यहीं सामायिक, प्रत्याख्यान, पर्युषण पर्व, प्रवचन और साधु-संघ के स्वागत जैसे धार्मिक आयोजन होते थे। आज उसकी दीवारें मौन हैं, किंतु उनमें बीते समय की साधना की अनुगूँज अब भी महसूस की जा सकती है। स्थानक का मुख्य प्रवेश द्वार आज भी अपने मूल स्वरूप में सुरक्षित है।

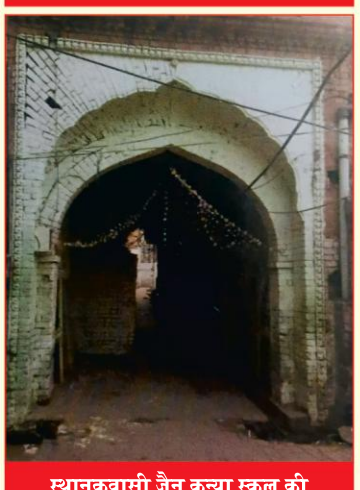

स्थानकवासी जैन कन्या स्कूल की खंडहर इमारत का वर्तमान स्वरूप

शिक्षा के क्षेत्र में भी कसूर का स्थानकवासी जैन समाज अत्यंत जागरूक था। यहाँ स्थापित जैन कन्या पाठशाला उस युग की दूरदर्शी सोच का प्रमाण थी। ऐसे समय में जब स्त्री शिक्षा अभी समाज में व्यापक रूप से स्वीकृत नहीं हुई थी, स्थानकवासी जैन समाज ने कन्याओं के लिए पृथक शिक्षण संस्था स्थापित कर सामाजिक जागरण का उदाहरण प्रस्तुत किया। जैन कन्या पाठशाला का भवन भी आज तक सुरक्षित रूप से विद्यमान है।

स्थानकवासी जैन कन्या स्कूल की खंडहर इमारत का वर्तमान स्वरूप

इसी प्रकार स्थानकवासी जैन जजघर, अर्थात जैन धर्मशाला, कसूर के सामाजिक और धार्मिक जीवन का महत्वपूर्ण केंद्र थी। इसकी इमारत अब भी किसी रूप में विद्यमान है, तो वह उस संस्थागत चेतना का प्रमाण है जिसने स्थानकवासी समाज को संगठित और सशक्त बनाया।

कसूर की भूमि केवल इमारतों की वजह से ही ऐतिहासिक नहीं है; यह अनेक महान विभूतियों की जन्मस्थली भी रही है। यहीं जैन साहित्य के प्रसिद्ध कवि हरजस राय जैन का स्थानकवासी जैन परिवार में जन्म हुआ, जिनकी देव रचना, साधु वंदना और अन्य स्तवन आज भी जैन समाज में श्रद्धा के साथ गाए जाते हैं।

इसी कसूर ने स्थानकवासी परंपरा को एक और अमूल्य विभूति दी - उपाध्याय मनोहर मुनि जी जोकि आचार्य सम्राट श्री आत्माराम जी महाराज के शिष्य थे, उनका कसूर में जन्म, इस नगर के आध्यात्मिक महत्व को और भी प्रतिष्ठित करता है।

सन् 1947 के विभाजन ने कसूर सहित पश्चिमी पंजाब के जैन समाज को अपनी जन्मभूमि छोड़ने के लिए विवश कर दिया। परिवार भारत आ गए, किंतु पीछे छूट गई वे गलियाँ, वे स्थानक, वे पाठशालाएँ और वे धर्मशालाएँ-जिनमें पीढ़ियों की स्मृतियाँ बसती थीं। आज कसूर की ये इमारतें मौन हैं, पर उनका मौन इतिहास बोलता है।

पाकिस्तान की भूमि पर खड़ी ये धरोहरें केवल स्थानकवासी जैन समाज की स्मृतियाँ नहीं, बल्कि भारतीय उपमहाद्वीप की साझा सांस्कृतिक विरासत हैं। कसूर हमें याद दिलाता है कि सीमाएँ बदल सकती हैं, लेकिन सभ्यताओं की स्मृतियाँ कभी समाप्त नहीं होती। स्थानकवासी जैन समाज का यह अध्याय आज पुनः शोध, संरक्षण और दस्तावेजीकरण की माँग करता है, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ जान सकें कि कसूर कभी केवल एक नगर नहीं, बल्कि जैन धर्म, शिक्षा और साहित्य की एक जीवंत धरा था।

(प्रस्तुति- डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत)

(क्रमशः)

जैन गौरव

अमर शहीद कन्धीलाल जैन

मध्यप्रदेश में नमक सत्याग्रह के साथ-साथ जंगल सत्याग्रह भी शुरु हुआ था जो यहाँ की विशेष भौगोलिक परिस्थिति के अनुकूल था। जनता ने जंगल कानून तोड़कर नमक-कानून तोड़ा था इसी कानून को तोड़नेवाले अमर शहीद कन्धीलाल जैन का जन्म 1894 में सिलोड़ी (जबलपुर) कस्वे के सेठ मठरूलाल के यहाँ हुआ था। कन्धीलाल जी झंडा लेकर घूमे और कानून तोड़े, विदेशी कपड़ों की होली जलाई। इस आंदोलन को दबाने के लिए एम.डी.ओ. छतरसिंह को विशेष पुलिस बल के साथ भेजा। चुनौती भरे स्वर में छतरसिंह ने कहा कि 'है कोई माई का लाल, जो सत्याग्रह करने की कोशिश करे' कन्धीलाल ने इस चुनौती को स्वीकार किया। अपनी गृहस्थी और अबोध बच्चों की परवाह न कर, उन्होंने 15 सितम्बर को संकीर्तन समापन के जुलूस का नेतृत्व किया। पुलिस ने लाठी चार्ज किया, कन्धीलाल पर अनगिनत लाठियों के वार पड़े पर झंडा नहीं झुकने दिया। एक लाठी का वार जो सिर पर मारा था, वह सदा-सदा के लिए भारत माँ की गोद में सो गया।

आचार्य पद चादर समारोह दिवस मनाया गया

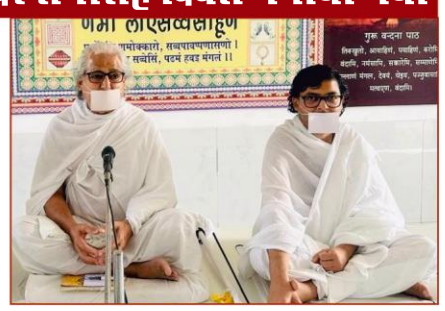

लुधियाना (पंजाब) : 7 मई 2026 को श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर आचार्य सम्राट पू. डॉ. शिवमुनि जी म. के 26वें आचार्य पद चादर समारोह दिवस पर आयोजित धर्मसभा में श्रद्धा, भक्ति और आध्यात्मिक चेतना का वातावरण देखने को मिला। लुधियाना शहर के न्यू किचलूनगर स्थित जैन स्थानक में आयोजित समारोह में संतों एवं श्रद्धालुओं ने आचार्य भगवंत के आध्यात्मिक नेतृत्व और समाजोत्थान में उनके योगदान का स्मरण किया। इस अवसर पर श्रमण संघीय सलाहकार दिनेश मुनि जी म. ने कहा कि आचार्य संघ का नायक और अनुशासन का केंद्र होता है। साधु-साध्वी आचार्य की आज्ञा में विचरण करते हुए धर्म प्रभावना, साधना और लोककल्याण के कार्य करते हैं। आचार्य की मर्यादा एवं निर्देश ही संघ को एक सूत्र में बांधकर आगे बढ़ाते हैं।

नवकार मंत्र के मंत्रोच्चार से शुभारंभ समारोह में डॉ. दीपेंद्र मुनि जी म. ने कहा कि नवकार मंत्र के तीसरे पद पर आचार्य को नमस्कार किया जाता है क्यूँकि आचार्य संघ के संचालन करने वाले होते हैं। समारोह के अंत में न्यू किचलूनगर संघ अध्यक्ष दिनेश जैन, मंत्री राजेन्द्र जैन, विजय जैन (जैन पैकवेल), श्री लालचंद जैन, महावीर युवक मंडल के अध्यक्ष वरूण जैन (दीपसंस) सहित शहर के गणमान्य श्रद्धालुओं ने मंगलकामना व्यक्त करते हुए कहा कि आचार्य भगवंत का दिव्य मार्गदर्शन, तप और ज्ञान सदैव मानवता का पथ आलोकित करता रहे तथा उनके सान्निध्य से समाज में धर्म और संस्कारों की ज्योति निरंतर प्रज्वलित होती रहे।

सम्पादकीय अस्वीकरण : 'जैन प्रकाश' में प्रकाशित समाचार, लेख एवं विचार संबंधित लेखकों/समाचार प्रेषकों/अन्य स्रोतों के निजी विचार हैं। उनकी सत्यता एवं प्रामाणिकता के लिए वही उत्तरदायी होंगे। संपादक एवं प्रकाशक किसी भी त्रुटि, मानहानि या विवाद के लिए उत्तरदायी नहीं होंगे। यह प्रकाशन भारतीय प्रेस एवं पंजीकरण अधिनियम, 1867 तथा लागू भारतीय कानूनों के अंतर्गत है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा। - डॉ. अमित जैन (सम्पादक/प्रकाशक)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक एवं प्रकाशक अमित जैन द्वारा मुद्रक पारस ऑफसेट प्रा.लि., 118-F, सेक्टर 56, फेज 5, कुंडली इंडस्ट्रियल स्टेट, सोनीपत - 131 028 द्वारा मुद्रित।
केन्द्रीय कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली - 110 001 से प्रकाशित ✲ सम्पर्क : 90197 31906